CBSE X	MT EDUCARE LTD.	Marks : 80
	SUBJECT : **HINDI COURSE - A**	
	SEMI PRELIM - I	
Date :	**MODEL ANSWER PAPER**	Time : 3 hrs.

	खण्ड : 'क'	
A.1.		
(क)	चातक-पुत्र की यह दशा थी कि वह प्यास से बेहाल हो रहा था । उसकी इस दशा का कारण भयंकर गर्मी पड़ना और वर्षा का न होना था ।	**2**
(ख)	चातक-पुत्र ने अपने पिता से यह कहा कि उसके प्राण चोंच तक आ गए हैं, उसे पानी की जरुरत है । उसके पिता ने उसे कुछ समय तक और धैर्य रखने के लिए कहा ।	**2**
(ग)	चालक-पुत्र ने बादलों की प्रतीक्षा न करके कहीं से भी जलग्रहण करके अपनी प्यास बुझाने का निश्चय प्रकट किया ।	**2**
(घ)	शीर्षक - कोटर और कुटीर ।	**1**
(ङ)	इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कष्ट उठाकर भी अपने व्रत का पालन करना चाहिए । व्रत पालन का सुफल अवश्य मिलता है ।	**1**
A.2.		
(क)	इस कविता में कहा गया है कि निराशाओं के बीच अपनी शक्ति का भरोसा रखो, चाहे वह शक्ति कम ही क्यों न हो ।	**2**
(ख)	रात को अमावस बनाने का अर्थ है - जीवन को निराशामय बनाना ।	**2**
(ग)	'कुहरा' समस्याओं या निराशाओं का प्रतीक है ।	**1**
(घ)	लेखक की शक्तियाँ सीमित हैं । इसलिए वह स्वयं को नन्हा दीपक कहता है ।	**1**
(ङ)	ये सब आशा के प्रतीक हैं ।	**1**
	खण्ड : 'ख'	
A.3.		
(क)	जब अध्यापिका ने छात्रा की प्रशंसा की प्रशंसा की तो उसका उत्साह बढ़ गया।	**1**
(ख)	ईमानदार ही सम्मान का सच्चा अधिकारी है।	**1**
(ग)	मिश्र वाक्य ।	**1**
A.4.		
(क)	हमसे रात भर कैसे जागा जाएगा ।	**1**
(ख)	तानसेन को संगीत सम्राट कहा जाता है।	**1**
(ग)	उन्होंने कैप्टन की देशभक्ति का सम्मान किया ।	**1**
(घ)	माँ द्वारा अवनि को पढ़ाया गया ।	**1**

A.5.		
(क)	**विभीषणों** - जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, संबंधकारक ।	**1**
(ख)	**देर तक** - कालवाचक क्रिया विशेषण, 'होती रही' क्रिया की विशेषता बता रहा है।	**1**
(ग)	**लिख रही है** - सकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, वर्तमान काल, कर्तृ वाच्य	**1**
(घ)	**अनेक** - अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग बहुवचन, 'चित्र' विशेष्य का विशेषण	**1**
A.6.		
(क)	श्रृंगार रस के भेद - संयोग श्रृंगार रस, वियोग श्रृंगार रस ।	**1**
(ख)	करुण रस का मूल स्थायी भाव शोक है।	**1**
(ग)	अदभुत रस का अनुभाव - रोमांच, आँखे फाडकर देखना, काँपना, गदगद होना।	**1**
(घ)	हास्य रस हाथी जैसी देह है, गैंडे जैसी खाल । तरबूजे सी खोपड़ी, खरबूजे से गाल।।	**1**
	खण्ड : 'ग'	
A.7.		
(क)	हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त की मजाक उड़ाना बहुत बुरा लगा । पानवाले ने चश्मे वाले की भावना का सम्मान करने की बजाय उसे लंगड़ा और पागल कहा । एक देशभक्त का ऐसा अपमान हालदार को कचोट गया ।	**2**
(ख)	हालदार ने कल्पना की थी कि सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति पर चश्मा लगाने वाला कैप्टन कोई लंबा-तगड़ा फौजी होगा । उसकी कोई छोटी-मोटी दुकान होगी । परंतु उसने देखा कि कैप्टन नाम का चश्मे वाला शरीर से बिल्कुल मरियल और लंगड़ा था । उसके सिर पर गाँधी टोपी और आँख पर काला चश्मा था । उसके एक हाथ में संदूकची थी और दूसरे हाथ में बाँस पर लटके चश्मे थे । उस गरीब बेचारे के पास दुकान भी नहीं थी । वह घूम-घूम कर चश्मे बेचता था । यह देखकर हालदार हैरान रह गया ।	**2**
(ग)	चश्मे वाला बहुत गरीब है । उसके पास दुकान तक नहीं है । मजबूरी में उसे गली-गली घूमकर चश्मे बेचने पड़ते हैं। वह शरीर से भी बहुत बूढ़ा, मरियल-सा और लंगड़ा है ।	**1**
A.8.		
(क)	नवाबों के मन में अपनी नवाबी की धाक जमाने की बात रहती हैं इसलिए वे सामान्य समाज के तरीकों को ठुकराते है तथा नए-नए सूक्ष्म तरीके खोजते हैं, जिससे उनकी अमीरी प्रकट हो। नवाब साहब अकेले में बैठे- बैठे खीरे खाने की तैयारी कर रहे थे, परंतु लेखक को सामने देखकर उन्हें अपनी नवाबी दिखाने का अवसर मिल गया । उन्होंने दुनिया की रीत से हटकर खीरे सूँघे और बाहर फेंक दिए। इस प्रकार उन्होंने लेखक के मन पर अपनी अमीरी की धाक जमा दी ।	**2**

(ख)	फादर कामिल बुल्के भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग थे । उन्होंने भारत में रहकर स्वयं को पूरी तरह भारतीय बना लिया। जब उनसे पूछा गया कि क्या आपको अपने देश की याद आती है - तो उन्होंने तुरंत ही उत्तर दिया-मेरा देश तो अब भारत है । फादर भारतीय मिट्टी में रच-बस गए। उन्होंने यहाँ रहकर राम- कथा के उद्‌भव और विकास पर शोध-कार्य किया । उन्होंने हिंदी सीखी ही नहीं, बल्कि अंग्रेजी- हिंदी का सबसे अधिक प्रामाणिक कोश तैयार किया । वे यहाँ के लोगों के उत्सवों और संस्कारों पर अभिन्न सदस्य के रूप में उपस्थित रहते थे। वे सचमुच भारतीय संस्कारों में खो चुके थे ।	**2**
(ग)	भगत ने अपने बेटे की मृत्यु को ईश्वर की इच्छा कहकर उसका सम्मान किया । उन्होंने उसकी मृत्यु को आत्मा-परमात्मा का शुभ मिलन माना इसलिए उसे उत्सव की तरह मनाया । उन्होंने पुत्र के शव को सफेद वस्त्र से ढँककर उसे फूलों से सजाया । उसके सिरहाने दीपक रखा । फिर वे उसके सामने प्रभु-भक्ति के गीत गाने लगे। वे खँजड़ी की ताल पर तल्लीन होकर गाते चले गए । उन्होंने विलाप करती हुई पतोहू को भी उत्सव मनाने के लिए कहा ।	**2**
(घ)	कोई नकारात्मक मनुष्य नेताजी के चश्मे बदलने को उनका मजाक कह सकता है । वह चश्मेवाले कैप्टन को पागल कह सकता है । एकाध नकारात्मक मनुष्य उसे नेताजी के अपमान में गालियाँ भी दे सकता है और उस पर मुकदमा भी दर्ज कर सकता है । उसे कैप्टन की देशभक्ति नहीं दिखाई देगी, उसका मजाक दिखाई देगा । कोई अफलातून ऐसा भी हो सकता है जो यह कहे कि कैप्टन सुभाष की मूर्ति पर चश्मे लगाकर अपने चश्मों का विज्ञापन करता है । ऐसी टिप्पणी दुर्भाग्यपूर्ण ही कहलाएगी ।	**2**
A.9.		
(क)	गोपियों के मन की बात मन में ही रह गई अर्थात गोपियोंकी प्रेम - भावना अधूरी रह गई क्योंकि कृष्ण गोपियों को ब्रज में अकेला छोड़कर मथुरा चले गए। गोपियों को आशा थी कि कृष्ण उनसे मिलने वापस आएँगे, परंतु कृष्ण ने उद्धव से योग साधना का संदेश भेज दिया। इस कारण कृष्ण के सामने अपना प्रेम प्रकट न कर सकीं ।	**2**
(ख)	जब गोपियों ने ऊधौ द्वारा योग - संदेश सुना और यह जाना कि यह संदेश कृष्ण ने भेजा है, तो उनकी विरह व्यथा और अधिक बढ़ गई । यह संदेश उनकी आशा के विपरीत था । इससे कृष्ण - मिलन की आशा मंद पड़ गई । इस कारण उनकी विरह व्यथा बढ़ गई ।	**2**
(ग)	गोपियाँ कृष्ण के वियोग की व्यथा सह रही थीं । वे यह सोचकर व्यथा सह रही थीं कि कुछ समय बाद कृष्ण अवश्य ब्रज में लौट आएँगे ।	**1**

A.10.		
(क)	कवि ने 'श्री ब्रजदूलह' कृष्ण के लिए प्रयुक्त किया है । उन्हें ब्रजदूलह कह कर, उनकी सर्वोत्कृष्टता स्वीकार की है । वे ऐसे महिमा-मंडित हैं कि उनका स्थान लेने में कोई भी समर्थ नहीं है । वे संसार-रूपी-मंदिर के दीपक हैं क्योंकि वे ऐसे दैदिप्यमान हैं, जिसके प्रकाश से संपूर्ण विश्व दीप्तमान हो रहा हैं । उनका प्रकाश-रूपी सत्ता सर्वत्र व्याप्त है ।	**2**
(ख)	परशुराम के क्रोध पर लक्ष्मण ने निम्नलिखित तर्क दिए - - बचपन में हमसे कितने ही धनुष टूटे, परंतु आपने उन पर कभी क्रोध नहीं किया । इस विशेंष धनुष पर आपकी क्या ममता है ? - हमारी नजर में तो सब धनुष एक- समान होते हैं । फिर इस धनुष पर इतना होहल्ला क्यों ? - इस पुराने धनुष को तोड़ने से हमें क्या मिलना था । - राम ने तो इस धनुष को छुआ ही था कि यह अपने-आप टूट गया । इसमें राम का कोई दोष नहीं ।	**2**
(ग)	कवि का जीवन कष्टों के थपेड़ों से आहत है, निराश है । उसकी स्थिती थके हुए पथिक की तरह है जिसका आगे बढ़ने का उत्साह समाप्त हो गया है, किन्तु जीना चाहता है और पाथेय से उत्साहित होता है । कवि के जीवन का आधार मात्र स्मृतियाँ हैं, जिन्हें संजोए रखना चाहता है । निराशामय स्थितियों से निकलने के लिए स्मृतियाँ ही उसका पाथेय हैं ।	**2**
(घ)	फाल्गुन में वसंत ऋतु का आगमन होता है । पतझड़ में पेड़ जो स्नेह–हीन उदासीन से खड़े रहते हैं, अनमने रहते हैं, वे सभी प्रसन्न हो उठते हैं । इस तरह फाल्गुन में उत्साह होता है । ऐसा अन्य ऋतुओं में नहीं होता है । कभी ठिठुरन होती है, तो कभी गर्मी का ताप संतप्त करता है तो कभी पतझड़ से पेड़ शोभाहीन होते हैं । अतः जो फाल्गुन में होता है, वह अन्य मौसम में नहीं होता ।	**2**
A.11.	रानी एलिजाबेथ के दरजी की परेशानी का कारण यह था कि रानी हिंदुस्तान, पाकिस्तान और नेपाल के शाही दौरे पर कब क्या ड्रेस पहनेंगी ? आखिर रानी ने एक ऐसे नीले रंग का सूट बनवाया जिसका रेशमी कपड़ा हिंदुस्तान से मँगाया गया था । इस सूट पर करीब 400 पौंड (पाँच हजार रुपए) खर्च हुए थे । हम दरजी की पेरशानी को इस तरह तर्कसंगत ठहराएँगे क्योंकि उसके ऊपर रानी की वेशभूषा की जिम्मेदारी थी । वह कोई मामूली हस्ती तो थी नहीं ।	**4**
	अथवा यहाँ पहाड़ी रास्तों पर कतार में लगी श्वेत(सफेद) पताकाएँ दिखाई देती हैं । सफेद बौद्ध पताकाएँ शांति और अहिंसा की प्रतीक हैं। इन पर मंत्र लिखे हुए होते हैं। ऐसी मान्यता है कि जब किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है तब उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी पवित्र स्थान पर 108 श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती हैं । रंगीन पताकाएँ किसी नए कार्य की शुरूआत पर लगाई जाती है ।	**4**

खण्ड : 'घ'

A.12.

(क)

अगर मैं प्रधानमंत्री होता !

मेरी कल्पना – अगर मैं प्रधानमंत्री होता ! यदि यह कल्पना सच होती तो मैं देश का नक्शा बदलकर रख देता । मैं भारतवर्ष को मजबूत राष्ट्र बनाने के लिए जी–जान लगा देता । मैं अपनी सेनाओं को इतना मजबूत बनाता कि कोई भी देश हमारी सीमाओं में घुसपैठ करने का विचार ही न करता । पाकिस्तान की दुष्टता को इतना अधिक सहन न करता । न ही अंतर्राष्ट्रीय मत की इतनी अधिक परवाह करता ।

मेरी विदेश नीति – मैं पड़ोसी देशों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध रखता । अगर पड़ोसी देश हमारी दोस्ती का जवाब दुश्मनी से देता तो अवश्य ही उसकी ईंट से ईंट बजा देता । मेरा सिद्धांत यही होता–

''हृदय में हो प्रेम लेकिन शक्ति भी कर में प्रबल हो ।''

देशद्रोह की समाप्ति – आज देश के अंदर देशद्रोहियों, भ्रष्टाचारियों, सांप्रदायिक शक्तियों और शोषकों का बोलबाला है । भारत के चप्पे–चप्पे में विदेशी शत्रुओं के एजेंट छाए हुए हैं । मैं प्रधानमंत्री होता, तो ऐसे देशद्रोहियों को कुचलकर मरवा डालता ।

भ्रष्टाचार पर रोक – वर्तमान भारत में भ्रष्टाचार का बोलबाला है । पिछले वर्षों में कितने बड़े–बड़े घोटाले हुए किंतु किसी का भी बाल बाँका नहीं हुआ । इससे भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों का उत्साह दुगुना हो गया है । अगर मैं प्रधानमंत्री होता तो भ्रष्टाचार के विरुद्ध सख्त कदम उठाता । भ्रष्ट अधिकारियों को चुन–चुनकर दंड देता । ईमानदारी का व्यवहार करने वाले अधिकारियों को पुरस्कार देता ।

सांप्रदायिकता पर रोक – भारत सांप्रदायिक झगड़ों में काफी धन-बल नष्ट करता है । मेरा प्रयास होता कि सांप्रदायिक भावनाएँ न भड़कें । मैं हर प्रकार से अल्पसंख्यकों और बहुसंख्यकों की दूरी को कम करता । अल्पसंख्यकों को राष्ट्रीय जीवन का अंग बनाने का प्रयास करता ।

औद्योगिक विकास पर बल – प्रधानमंत्री बनने पर मैं जनसंख्या–वृद्धि और बेरोज़गारी के विरुद्ध अभियान छेड़ देता । शिक्षा, तकनीक और औद्योगिक विकास के क्षेत्र में क्रांति ला देता । शिक्षा को रोज़गार से जोड़ता । ऐसी व्यवस्था करता, जिससे हर स्नातक को व्यावसायिक प्रशिक्षण मिलता और हर प्रशिक्षु को रोज़गार मिलता । मैं देश के प्रतिभाशाली कलाकारों, वैज्ञानिकों, खिलाड़ियों और व्यवसायियों को पुरस्कारों से सम्मानित करता ।

विदेशी संस्कृति पर रोक – आज भारत पर विदेशी संस्कृति के आक्रमण हो रहे हैं । महिलाओं को बाजारू संस्कृति का अंग बनाया जा रहा है । मैं इस बुरी प्रवृत्ति पर रोक लगाता । भारतीय संस्कृति और भारतीय मिट्टी का सम्मान बढ़ाने के लिए हर संभव कोशिश करता ।

10

(ख)

विज्ञान : वरदान या अभिशाप

विज्ञान : एक वरदान – आकेंडियन फरार लिखते हैं - ''विज्ञान ने अंधों को आँखें दी हैं और बहरों को सुनने को शक्ति । उसने जीवन को दीर्घ बना दिया है, भय को कम कर दिया है । उसने पागलपन को वश में कर लिया है और रोग को रौंद डाला है ।'' यह उक्ति सत्य है । विज्ञान की सहायता से असाध्य रोगों के इलाज ढूँढ़ लिए गए हैं । कई बीमारियों को समूल नष्ट कर दिया गया है ।

रसोई - घर से लेकर मुर्दाघर तक सब जगह विज्ञान ने वरदान ही वरदान बाँटे हैं । विज्ञान की सहायता

से पूरी दुनिया एक परिवार बन गई है । जब चाहे, तब मनुष्य अपने प्रियजनों से बात कर सकता है । घंटे भर में दुनिया का चक्कर लगा सकता है । सेकेंडों में दुनिया - भर को कोई संदेश दिया जा सकता है ।

विज्ञान ने दूरदर्शन, रेडियो, वीडियो, आडियो चलचित्र आदि के द्वारा मनुष्य के नीरस जीवन को सरस बना दिया है । चौबीसों घंटे चलने वाले कार्यक्रम, नए - नए सुंदर सुस्वादु व्यंजन, सुखदायक रंगीन वस्त्र, सौंदर्य - वर्द्धक साधन विज्ञान को ही देन हैं ।

विज्ञान : एक अभिशाप – विज्ञान का सबसे बड़ा खतरा है - पर्यावरण - प्रदूषण इसके कारण आज शहरों में साँस लेना दूभर हो गया है । हर जगह शोर, गंदगी और बीमारियों का साम्राज्य - सा फैल गया है । कृत्रिम खादी, दवाइयों के कारण भूमि से उत्पन्न अन्न - फल तक दूषित हो गए हैं ।

विज्ञान की सहायता से मनुष्य ने खतरनाक बम बना लिए हैं । इससे अनेक बार विषैली गैसें तथा रेडियोधर्मी किरणें विकीर्ण हो चुकी हैं । भोपाल गैस कांड और ओजोन गैस की परत का फटना इसके ज्वलंत उदाहरण हैं । यातायात की तेज गति के कारण भी मौतें होने लगी हैं । लोगों के शरीर पंगु होने लगे हैं । ये सब जीवन पर अभिशाप हैं ।

अमानवीयता – आज वैज्ञानिक मानव स्वार्थी, छली, चालाक, कृत्रिम और विलासी हो गया है । दया, मानवता, श्रध्दा, आदर, कोमलता जैसे मानवीय गुणों से उसका नाता टूट गया है । ये बातें मनुष्य के लिए अशुभ हैं । विज्ञान ने मनुष्य को बेरोज़गार बना दिया है । सैकड़ों आदमियों का काम करने वाली मशीनों ने कारीगरों के हाथ बेकार कर दिए हैं ।

निष्कर्ष – सच बात यह है कि विज्ञान के सदुपयोग या दुरुपयोग को ही वरदान या अभिशाप कहते हैं । विज्ञान का संतुलित उपयोग जीवनदायी है । उसका अंधाधुंध दुरुपयोग विनाशकारी है । **10**

कंप्यूटर और टी.वी. का प्रभाव

कंप्यूटर और टी.वी. का बढ़ता प्रचलन – कंप्यूटर और टी.वी. आधुनिक युग के सबसे बड़े वरदान हैं । इन दोनों ने इतनी रोचक और उपयोगी दुनिया बसा ली है कि आदमी इन्हीं की दुनिया में खोया रहना चाहता है । उन्नति की धारा के साथ चलने वाला हर मनुष्य दैनिक इन दोनों की सेवाएँ अवश्य लेता है ।

सकारात्मक प्रभाव – कंप्यूटर ने सांसारिक यात्रा को बहुत सरल और सुगम बना दिया है । कंप्यूटर से बैंक रेल - सेवा, बिल - अदायगी जैसी सेवाएँ सरल, त्वरित और निर्दोष हो गई हैं । अब बैकों के ए.टी.एम बिना भेदभाव के चौबीसों घंटे पैसे उपलब्ध करवाते हैं । कंप्यूटर और इंटरनेट के सहारे हम घर बैठे- बैठे अपने सभी बिल जमा करवा सकते हैं तथा यात्रा - टिकट ले सकते हैं ,यहाँ तक कि खरीददारी भी ऑन लाइन हो गई है । इंटरनेट ने ज्ञान के विपुल भंडार मुफ्त उपलब्ध करा दिए हैं । कोई जिज्ञासु चाहे तो इंटरनेट के माध्यम से विश्व - भर की छोटी - से - छोटी जानकारी भी प्राप्त कर सकता है ।

दूरदर्शन भी ज्ञान का स्त्रोत है किंतु लोग इसे मनोरंजन के साधन के रूप में स्वीकार करते हैं । आजकल सैकड़ों चैनल विविध प्रकार के मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक और विचारोत्तेजक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं । उन्हें सुनकर मनुष्य की चेतना विकसित होती है ।

नकारात्मक प्रभाव – कंप्यूटर और टी.वी. के नाकारात्मक प्रभाव भी सामने हैं । ये दोनों साधन

दर्शक को एक जगह पर बाँध कर बिठा देते हैं और उसकी चेतना को पूरी तरह केंद्रित कर लेते हैं । परिणामस्वरूप लोग दैनिक कई घंटे इनमें खर्च कर देते हैं । सच मायनों में दिन में २४ नहीं २०-२१ घंटे रह गए हैं । इस कारण बच्चों के खेल खत्म हो गए हैं, रिश्ते - नाते कम हो गए है, सामाजिक संबंध ढीले पड़ गए हैं । दूरदर्शन और कंप्यूटर में संलिप्त व्यक्ति अकेली दुनिया की सुरंग में खोया हुआ अजनबी हो गया है जिसे सारी दुनिया को मुट्ठी में करने की ललक तो है किंतु किसी से बात करने की फुर्सत नहीं है । इस कारण लोगों की आँखों पर चश्में चढ़ गए हैं, पेट में चर्बी चढ़ गई है । मोटापा, हृदयाघात, शुगर, तनाव जैसी बीमारियाँ बढ़ने लगी हैं । अशोक सुमित्र ने सही कहा है -

कंप्यूटर और टी.वी. ने ऐसी छेड़ी तान ।
पंछी पिंजरों में घुसे, भूल गए हैं उड़ान ।।

इन दोनों साधनों का सबसे नकारात्मक प्रभाव है - अश्लीलता और अपसंस्कृति का प्रसार । बच्चे तड़क - भड़क वाले उत्तेजक कार्यक्रमों तथा नग्न दृश्यों में रुचि लेने लगे हैं । इस कारण समाज में छेड़छाड़, बलात्कार, चोरी, लूट आदि की आपराधिक घटनाएँ बढ़ने लगी हैं ।

नकारात्मक प्रभाव से बचने के उपाय – नकारात्मक प्रभावों से बचने का सर्वोतम उपाय है - आत्म - संयम । आज अच्छे और बुरे - सब प्रकार के कार्यक्रम दूरदर्शन और इंटरनेट पर उपलब्ध हैं । इनमें से अच्छे कार्यक्रम में रस लेना, उनका सीमित उपयोग करना उपभोक्ता पर निर्भर है और रहेगा । अश्लील कार्यक्रमों पर रोक लगाने में सरकार की, मीडिया की, जनमत की, सामाजिक संगठनों की भी भूमिका हो सकती है । सरकार को चाहिए कि वह सेंसर - नियमों का प्रभावी प्रयोग करके नकारात्मक प्रभावों को रोकने के लिए कदम उठाए । **10**

A.13. क. ख. ग.
.... पता,
दिनांक - 15-3-2016
प्रबंधक
हिंदी बुक सेंटर इंदौर

विषय : कटी- फटी पुस्तकों की वापसी ।

महोदय

बड़े खेद के साथ आपकों सूचित करना पड़ रहा है कि आपने मुझे जो निम्नलिखित पुस्तकें भेजी हैं, वे कटी-फटी तथा पुरानी है । यह व्यवहार आपकी प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं है । मैं ये पुस्तकें वापस लौटा रहा हूँ । आप शीघ्र ही इनकी जगह नई पुस्तकें भिजवाएँ । आपने जो मेरा समय नष्ट किया है, उसकी भरपाई नहीं हो सकती । अब कृपया पुस्तकें शीघ्र भेंजे । पुस्तके निम्नलिखित हैं -

कामायनी : जयशंकर प्रसाद
उर्वशी : दिनकर

भवदीय
क. ख. ग. **5**

अथवा

सेवा में
संपादक महोदय
दैनिक हिंदुस्तान
नई दिल्ली
महोदय,

विषय : लाउडस्पीकर के शोर के संदर्भ में शिकायती पत्र ।

आपके प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के माध्यम से मैं मुहल्ले में लाउडस्पीकरों के शोर के कारण हो रहे कष्ट का वर्णन करना चाहता हूँ। कृपया इसे 'लोक-वाणी' शीर्षक स्तंभ में प्रकाशित कर अनुगृहीत करें।

आजकल हमारे मुहल्ले प्रेमनगर में चारों ओर लाउड स्पीकरों के शोर के कारण जीना दूभर हो गया है। मुहल्ले में एक सत्यनारायण भगवान का मंदीर है और एक गुरूद्वारा ऐसा लगता है कि दोनों में होड़ लगी है कि कौन अधिकाधिक ऊँची आवाज में उस सोते हुए बहरे प्रभु को जगाकर अपनी राम-कहानी सुना सकता है ।

आपके पत्र के माध्यम से मैं उन लोगों तक अपनी तथा मुहल्लेवालों की व्यथा पहुँचाना चाहता हूँ जिनके कानोंपर जूँ तक नहीं रेंगती जिनको अब स्वयं जाकर कहना आत्मसम्मान के विरूद्ध लगता है।

भवदीय
विवेक शर्मा
..... मुहल्ला
..... नगर
दिनांक 14-5-2016 **5**

A.14. (क)

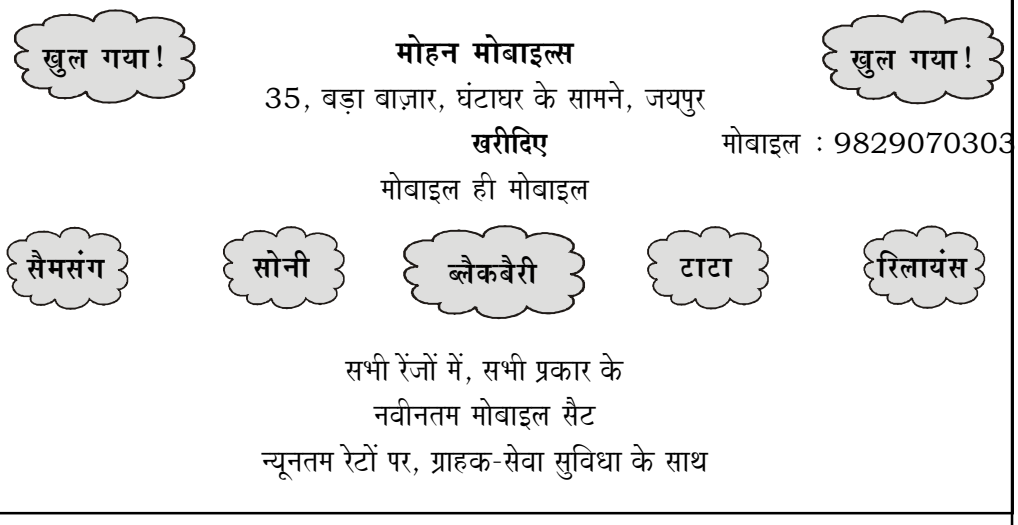

5

अथवा

विश्वास नहीं होता!

एक लीटर पेट्रोल में

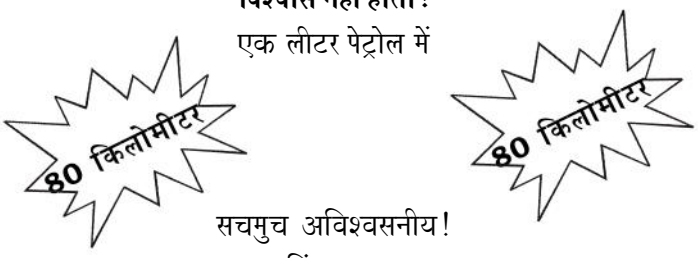

सचमुच अविश्वसनीय!

किंतु सच

आस्था स्कूटी

आज ही लाइए

पेट्रोल की बचत कीजिए!

नई तकनीक, नया डिजाइन, नए रंग, मोहक स्टाइल!

कार्यालय पता : 300, इंडस्ट्रियल स्टेट, पंजाब । **मोबाइल :** 07723456710 **5**

❖❖❖❖